— म्रा desid. med. erlangen —, eintreiben wollen: ऋणाद्या नर्णामेर्ट्स-माणा यमस्य लोके उधिरञ्जरायेत् AV.6,118,2.

— उप desid. vollführen wollen, beharrlich bleiben, ausdauern: नत-त्रमुपत्र्मत् Çat. Ba. 2, 1, 2, 17. 19. एतेषामेकं संवत्सरम्पर्देमत् 3, 2, 14.

— वि pass. verlustig gehen, mit dem instr.: पशुभिव्यृध्यित Çat. Ba. 13,1,2,8. व्यृंड abgetrennt, ausgeschlossen, ungehörig: मियुनेन व्यृइ: 2, 1,2,4. 3,2,2,15. व्यृंड वे तखज्ञस्य यन्मानुषम् 1,2,2,9. 7,2,9. श्रृंव्यृड ungeschmälert 12,3,5,12. — caus. ausschliessen von, berauben, mit dem instr. der Sache: लेत्रेणैनं व्यर्धपानि Ait. Ba. 2,33. 3,3. Çat. Ba. 4,4,2,13. 5,3,5,25. 13,2,2,15. pass.: इन्ह्रस्पानु व्यृद्धिं लत्रं सोमपोथेन व्यार्धत। तद्यृडमेवाध्यापि लत्रं सोमपोथेन Ait. Ba. 7,28. Çat. Ba. 2,1,2,4. 3,1,7. 4, 1,4,8. 5,5,4,10.13. — desid. vereiteln wollen: मा वृन्दिं मा वार्च ने। वीर्त्सिशि 8.

— सम् act. gedeihen: काः निएवंस्तान्समृध्यात् M.9,315. शत्र्पनं सम्-ध्यतम् MBH. 2, 1960. — pass. 1) in Erfüllung gehen, gelingen, zutheilwerden: इक् प्रियं प्रजया ते सम्ध्यताम् R.V. 10,85,27. सं म श्राकृतिर्श्वध्य-ताम् AV. 4, 36, 4. 8, 2, 13. 12, 4, 19. 19, 52, 5. श्रयं मे कामः समृध्यताम् VS. 26, 2. Çaт. Ba. 1,9, 1, 16. 4,1, 4, 1. न हैवास्मै तत्समान्धे 2. 8. सा (म्राशीः) ते सर्वा समर्घिष्यते 1,8,1,9. 3,5,1,22. 2,9. समार्ध्यत 1,8,1,10 (so ist auch 6,2,7 zu lesen). सम्ध्यते 11. यद्स्मै स काम: समद्भेत (lies ध्येत) Жилло. Up. 1,3,12. न मे स कामः समार्धि ÇAT. Ba. 3,9,1,2. म्रसावस्मै कामा मा समधीित 14,8,45,10 (Br. År. Up. 5,14,7: समृद्धीत). 4,6,5,5. तेषामायाचितं देव व्यतप्रसादात्सम्ध्यताम् R. 2,2,37. सँमृद्ध erfüllt, gelungen, vollständig, vollkommen: युवं भगं सं भेरतं समृद्धम् AV.14,1,31. ए-तदे यत्तस्य समृद्धं यद्रूपसमृद्धम् 🗛 🕫 🗛 1, 4. सिमद्धेक्। मेन क्येव समृद्धा ग्रा-क्रतपः Çat. Ba. 1,5,2,7. 3,6,1,29. न वै सुसर्वाविव स्था न सुसमृद्धाविति 4,1,5,10. ग्रैंसमृद्ध 11.13. एवंसमृद्ध 5,1,3,10. समृद्धे कर्म Kelnd. Up. 5,2, 8. समृहार्थ R. 1,44,60. 3,24,10. 4,44,105. Hip. 1,42. ग्रसम्ह्रेन कामेन R.2, 92, 16. मुसमृहतेत्रस् 104, 26. समृह्यान् (ausgewachsene) वनस्पतीन् Hip. 1, 11. समृद्धवंग mit beschleunigter Hast Buag. 11, 29. — 2) theilhaft werden, sich vereinigen; mit dem instr. der Sache : स्वया तचा समृध्या इति ÇAT.BR. 3,1,2,16. सम्द्र theilhaft, mit Etwas versehen, ausgerüstet; das obj. im instr.: स्वया कि बचा समृद्धा भवति ÇAT. BR. 3,1,2,16. 2,1,2,5. शस्यै: स-मृद्धा धरा Duûrtas. 96,9. das obj. im abl.: (कुलानि) समृद्धानि गाँउजावि-धनधान्यतः M. 3, 6. मस्रतस्तु समृद्धानि कुलान्यल्पधनान्यपि 66. geht im comp. voran: विद्यातपःसमृह्य M. ३,९८. पुष्पभारसमृह्याना हुमाणाम् R. ३,७९, 18. स्त्रीगां मरसमृद्धानाम् 5, 10, 12. पराक्रमीत्साक्समृद्धमानस 42, 14. absol. wohl ausgestattet, reich = श्रधिका ई AK. 3,1,11. स या मृनव्याणा राइ: समृद्धा भवति ÇAT. BR. 14,7,1,32 (= BRH. ÅR. UP. 4,3,33). M. 3,125. 8, 170 (Gegens. पश्चिण). N. 10, 2. 13, 13. 17, 43 (Gegens. ऋधन). R. 1, 9,11. 33,24. 2,40,5 (Gegens. ट्यसनिन्). Hir. Pr. 6. 45, 7. युराणि R. 4, 41, 16. 5, 23, 9. (154 Bhag. 11, 33. — caus. 1) erfüllen, gelingen machen Nia. 8,6. कामान्समेर्घयतु नः SV. II, 5,2,8,4. VS. 20,12. यदस्मै तं कामं समर्धयेषु: Çat. Ba.1,1,2,19. तथा एवैनं समर्धयति कृतस्तं करेाति 5,5,4, 19. 1, 4, 5. 4, 5, 2, 10. — 2) theilhaft machen, vereinigen; mit dem acc. des nähern und instr. des entferntern obj.: ऋचा स्तामं सर्मर्धय VS.11, 8. स्वे नै वैनं तद्वागधेयेन समर्धयन्ति Air,Ba.1,3.13. सत्ये नैवैतत्समर्धयन्ति Çat. Ba. 1, 3, 1, 27. 2, 1, 1, 1. fgg. 4, 1, 1. 4, 4, 2, 13. 5, 3, 5, 25. 5, 4, 13. 18.

1. ऋर्षे Çant. 2, 13. 1) adj. nom. pl. ऋर्षे oder ऋर्धास् P. 1,1,33. Vop. 3, 12. halb, hälftig, die Hälfte ausmachend; मर्घ – मर्घ (मर्घ – नेम) der eine Theil — der andere Th., die Einen — die Andern: ऋर्धमर्धेन पर्यसा पणात्यर्धेने प्रष्म वर्धसे 🛦 ४.5,1,9. तेषा वा म्रधानुपिकरित । म्रधाननुदिश-ति ÇAT. Bn. 3,6,2,22. 2,6,4,5. 4,6,8,5. 5,1,2,5. पर्चाति नेमी निक् पर्नर्धः RV. 10,27,18. यावर्घे मार्गे गच्छति Vet. 22,2. Am Anf. eines comp. P. 2,2,2. ऋर्घपरा Kâts. Ça. 17,1,15. 11,7. ऋर्घपुतृष, विषय 16,8,2.7.8. fgg. ऋधेपण M. 8,404.150.243. N. 11,30. ऋधमार्गे Ragh. 7,42. ऋधेक्रस्व eine halbe Mora P. 1,2,32. adj. von compp. mit आर्थ und einem Maasse 7,3, 26.21. मर्घाम्ब halb mit Wasser AK.2,9,53. H.409. मर्घेन्द्र halb dem I. gehörig Çat. Br. 9,3,2,9. ऋघावशेष zur Hälfte übrig geblieben R. 5, 14, 49. = ऋधंशेष 51. 15,20. ऋधंश्याम halbbewölkt Çak. 60. ऋधंपूर्ण halbgefüllt Kats. Ca. 9,6,24. ऋर्घिष्ट 5,1,11. ऋर्घम्ता R. 5,28,17. so häufig mit einem part. praet. pass. P. 5,4,5. N. 24,47. Çâk. 7.131.173. 12,11. 15, 3. 67, 9. 86, 17. 107, 8. Pankat. 254, 20. 21. 25. 256, 22. Megh. 21. 环-ध्वहा von mittlerm Alter AK. 2, 6, 1, 17. Trik. 3, 3, 232. H. 531. vor einem nom. card.: ऋर्घशत 150 M. 8, 267. 311 (nach Kull. 50). ऋर्धत्रपाद-शन् 131/2 Jāćń. 2,165.204. ऋर्घसप्तशत 750 R. 2,34, 13. 39,36 (Gorr.: 350). Dagegen ऋर्घपञ्चाशत् 25 M. 8, 268. vor einem nom. ordin. P. 1, 1, 23, Yartt. 3. ऋर्घततीय drittehalb Acv. Ca. 12, 5. R. 2, 92, 10. Suga. 2, 167, 11. ऋर्घचतुर्य viertehalb 196, 16. ऋर्घपञ्चम M. 4, 95. ऋर्घपञ्चमक für 41/2 gekauft u. s. w. P. 1, 1, 23, Vartt. 3, Sch. ऋर्धसप्तदश 161/2 Kats. Ca. 8, 3, 10. nach einem card.: द्शार्घानाम् der fünf M. 1,27. — 2) Hälfte, m.: यञ्चा-सावधा य उ चायमर्धः ÇAT. BB. 1,2,2,5, 5,2,1,10. पर्नेयः पर्नेत्रार्धान्संचस्कार Nig. 1, 13. n. P. 2, 2, 2. AK. 1, 1, 2, 17. H. an. 2, 238. Med. dh. 2. A रिचे दिव इन्द्रीः पृथिव्या मुर्धमिर्दस्य प्रति रेार्दसी उभे Rv. 6,30,1. मुर्धेन् विश्वं भुवनं जजान् पर्दस्यार्धे बार् तर्द्धभूव AV. 18,8,7. तस्यार्धमलर्वेदि स्या-द्धे बल्विंदि ÇAT. Br. 3, 6, 1, 26. 3, 3, 3, 8, 6, 1, 12. 7, 2, 3. 2, 7. 8. u. s. w. Kâtj. Çn. 16, 8, 4. M. 1, 32. 8, 38. 210. 296. 9, 112. 11, 255. N. 10, 3, 16. 19. 13, 36. Внактя. 3, 50. Касн. 12, 99. Угр. 228. 334. यर्धे विच्छिलम् Сак. 9. चन्द्रार्घ R. 1,28,25. Ragh. 3,59. am Ende eines adj. comp. f. श्रा Катна́з. 20,22. — 3) der eine Theil von Zweien, Partei: ग्रह्मार्कमधमा गीहि RV. 4, 32,1. मर्घ वोरस्प (परा नुन्दे) 7,18,16. मर्घ कर bevorzugen, begünstigen: तोकस्य माता तर्नयस्य भूरेरस्माँ मुर्धे कृण्तादिन्द्र गानीम् 2,30,5. म्रया ता-कस्य तर्नयस्य जेष इन्ह्रं सूरीन्कृणुक्ति स्मा ना म्रर्धम् 6,44,18. - 4) eine halbe Mora: ऋधंसममुक्तावली Verz. d. B. H. No. 814. — Vgl. सार्धम्. 2. 氢氧 m. 1) Seite, Theil (einer von zweien) Cant. 2, 13. AK. 1, 1, 2, 17. H.1434. an. 2,238. Med. dh. 2. (उपसः) पूर्वे म्रधे रुजेसी भान्। सुर. 1, 92,1. दिव स्रोङ: परे सर्धे प्रीपिणम् 164,12. उभावधी भवतः साधू र्सस्मे 2,27,15. वि वीचा पमर्ध ते मधवन्त्रेम्या धूः 10,28,5. 6,27,5. AV.4,1,6. पूर्वा उर्घा वे शिरः ÇAT. Ba. 1,3,3,12. दित्तणो उर्घः पशोर्वोर्पवत्तरः 8,2,4, 19. 6,2,12. 9,3,4,11. 11,2,6,5.6. मध्यायतार्धम् (vom Körper) Mâlav. 27. ग्रामार्घ: P.2,2,2, Sch. Vgl. श्रवरार्घ, उत्तरार्घ, जघनार्घ, परार्घ, पञ्चार्घ, पूर्वार्ध. — 2) Ort, Platz, Gegend: दिवे दिवे संस्थीरन्यमर्धं कृष्णा मेंसेध्दप

सर्वाने जाः ए.v. 6,47,21. सा कुद्रीची कं स्विद्धं परागात् 1,164,17. कुत-

स्ता जाता केतमः सा ऋर्धः 🗚 🗸 🐧 . तस्माखा उर्धस्य श्रेष्ठा भवत्यसावम्-

ष्यार्घस्य शिर् इत्याङ्गः Çar. Ba. 1, 4, 5, 5, 5, 4, 5. 2, 1, 2, 8. यज्ञस्यार्धात् 4,

3,4,14. श्राक्वनीयस्पार्ध मैति 7,3,1,6. 3,7,4,10. 4,2,4,20. 11,4,1,2. 12,